अंगुलियों के अग्र भाग से बाहर निकले होते हैं। जारवा के पुरूषों के शरीर में तो रोम नही होते हैं। किन्तु थोड़ी बहुत दाढ़ी और मुछें होती हैं। इनका मस्तिष्क माध्यम आकार का होता है और पश्च-कपाल में उभार भी अधिक नही होता है। इनके लवों की मोटाई मध्यम होती है और ये सामान्य रूप से जुड़ी नही रहती हैं। इनकी ठुड्डियाँ अंडाकार की होती हैं। इनके नाक मोटे और चपटे होते हैं।

जारवा जाति में शरीर को महिला और पुरूष के पहचान का जारिया माना जाता हैं और वे मानवीय शरीर को अन्य प्राणी के शरीरों से भिन्न मानते हैं। वे गर्भधारण को शरीर की प्रक्रिया समझते है और रोग एवं मृत्यु को शरीर से जुड़ी हुई सांस्कृतिक पहलू मानते हैं।

रहन-सहन

जारवा तड़के उठकर समूह में शिकार के लिए जंगल चले जाते हैं और अपने कुटीर में बच्चों, महिलाओं, रूग्ण तथा वृद्ध व्यक्तियों को छोड़ जाते हैं और पूरे दिन शिकार करने के बाद वे शाम को घर लौटते हैं। दिन में महिलाएं टोकरियाँ बुनती हैं, मछलियाँ, कछुएं, सीप, आदि पकड़ती हैं। दिनभर शिकार में व्यस्त रहने के बाद नीरसता को दूर करने के लिए वे रात को अलाव के चारो ओर घूमकर नाचते हैं और गाते हैं। इसके बाद वे खाना खाकर सो जाते है। जिस दिन वे शिकार पर नही जाते हैं, उस दिन वे धनुष और तीर बनाते है।

जारवा बचपन से ही धनुर्विद्या का अभ्यास करते हैं और इतने पारंगत हो जाते हैं कि वे अपने निशाने से जानवरों के साथ-साथ मछली और कछुओं का शिकार भी तीरों से करते हैं। पहले यह धारणा थी कि वे अपने तीरों पर लार का उपयोग विष के रूप में करते थे, किन्तु बाद मे यह धारणा भ्रामक सिद्ध हुई। गज़ब के तीरन्दाज होने के साथ-साथ वे पेड़ों में चढ़ने में भी माहिर होते हैं।

पहनावा एवं वेश-भूषा

जारवा जाति में अपने बदन को ढंक कर रखने की प्रथा नहीं है। तथापि जरावा के पुरूष समारोह और शिकार करते समय अपने सीने पर मोटे छाले से निर्मित कवच बांधते हैं। इस कवच से उन्हें न केवल सुरक्षा प्राप्त होती हैं, अपितु इसमें वे चाकू या तीरों को बांधकर रख भी सकते हैं।

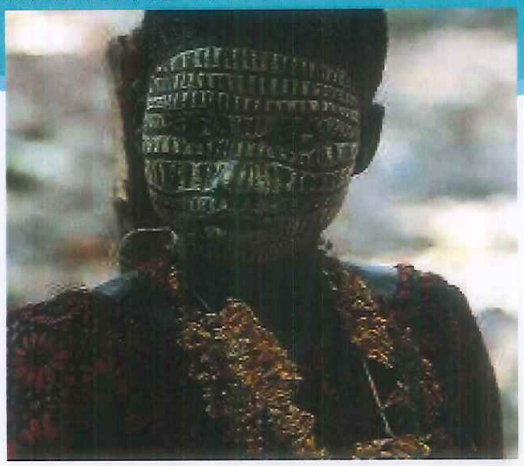

यै विविध तरीकों से अपने को सजाने-सँवारने से नहीं चुकते हैं। पत्तियों सीपियों, कौडियों से निर्मित ललाटबंद, मालाएँ, बाजुबंद और कमरबंद का उपयोग आभूषण के रूप में करते हैं। जारवा जाति में महिलाएं ही कमरबंद का उपयोग करती हैं। महिलाएं और पुरूष दोनों ही सफेद चूने से अपने पूरे शरीर को रंगते हैं। ये अपने कपाल, मुंह, छाती, बांहों और पैरों में ज्यामितीय चित्र बनाते हैं। लाल रंग जरवा का सबसे प्रिय रंग होता है।

खान-पान

वे अपने खान-पान में न केवल खाद्य सामग्रियों की उपयोगिता को ध्यान में रखते हैं अपितु अपने आस-पास के पशुओं के लिए इन खाद्य सामग्रियों की उपयोगिता पर भी ध्यान देते हैं। वे ऐसे फलों को आहार के रूप में अपनाते हैं जिन्हें शूकर या हिरण खाते हैं। वे जंगली कटहल जैसे फलों का भक्षण भी करते हैं जिन्हें शूकर या हिरण नही खाते हैं। इनके खान-पान में विभिन्न प्रकार के फल, कंद-मूल, शहद, जंगली बादाम, तेंदु, आम, सीप, मछलियाँ, चिड़ियाँ और कछुए, जंगली छिपकली (गोई) और शूकर आदि शामिल हैं। इनकी पाक विधि के तीन प्रकार होते हैं, नामतः जलाना, उबालना, सेक कर पकाना। उनके खाने का समय नियत नही होता है। जब ये क्षुधातुर होते हैं, तब वे किसी भी खाद्य सामग्री से अपनी क्षुधा शांत कर लेते हैं। उनकी जाति में पारिवारिक रसोईघर और सामुदायिक रसोईघर की प्रथा हैं। परिवार द्वारा लाई गई सामग्रियों को पकाकर परिवार के सदस्यों में बांट दिया जाता है, किन्तु बड़े शुकर और भारी तादात में जंगली कटहल लाने पर इन्हें बड़े चूल्हे में पकाकर वे समुदाय में बांटते हैं। इनके खान-पान में न तो नमक का और न ही मसालों का उपयोग होता